क्या पौलुस यह सिखा रहा था कि हमें बपतिस्मा का प्रचार नहीं
करना चाहिए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

(1 कुरिन्थियों 1:17)

बहुत से लोग 1 कुरिन्थियों 1:17 का हवाला देते हैं, जहाँ प्रेरित पौलुस कहता है:

“क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिये नहीं, परन्तु सुसमाचार सुनाने के लिये भेजा है, और यह शब्दों की बुद्धि से नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।”
— 1 कुरिन्थियों 1:17 (हिंदी बाइबल)

इसी पद के आधार पर कुछ लोग यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं:
“जब पौलुस को बपतिस्मा देने के लिये नहीं भेजा गया था, तो शायद हमें भी बपतिस्मा के विषय में प्रचार करने की ज़रूरत नहीं है। हमें तो केवल मसीह पर विश्वास का प्रचार करना है।”

लेकिन क्या वास्तव में पौलुस का यही अभिप्राय था?
और क्या इसका अर्थ यह है कि हम बपतिस्मा या अन्य मूलभूत शिक्षाओं—जैसे पश्चाताप, पवित्र आत्मा और पवित्र जीवन—को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं?

आइए, इसे पवित्रशास्त्र के प्रकाश में सही रीति से समझें।

क्या पौलुस यह सिखा रहा था कि हमें बपतिस्मा का प्रचार नहीं
करना चाहिए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

1. परमेश्वर का हर सेवक पूरे वचन का प्रचार करने के लिये बुलाया गया है

सुसमाचार का प्रचार केवल कुछ चुनिंदा बातों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा को घोषित करना शामिल है। स्वयं पौलुस कहता है:

“इसलिये मैं आज तुम्हें साक्षी ठहराकर कहता हूँ कि मैं तुम
सब के लहू से निर्दोष हूँ; क्योंकि मैं ने परमेश्वर की सारी मनसा तुम्हें बताने से पीछे नहीं हटाया।”
— प्रेरितों के काम 20:26–27

इसका अर्थ यह है कि कोई भी प्रचारक या सेवक यह अधिकार नहीं रखता कि वह कुछ सच्चाइयों को छोड़ दे या छिपा ले—चाहे वे बातें कठिन हों या असुविधाजनक लगें।

यद्यपि हमारे वरदान अलग-अलग हैं (रोमियों 12:6–8), परन्तु सुसमाचार एक ही है (गलातियों 1:6–9)। हमारी शैली भिन्न हो सकती है, परन्तु संदेश वही रहना चाहिए—पूरा सुसमाचार, जिसमें पश्चाताप, विश्वास, बपतिस्मा और पवित्र जीवन सम्मिलित हैं।

क्या पौलुस यह सिखा रहा था कि हमें बपतिस्मा का प्रचार नहीं
करना चाहिए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

2. 1 कुरिन्थियों 1:17 में पौलुस वास्तव में क्या कहना चाहता था?

पौलुस बपतिस्मा के महत्व को नकार नहीं रहा था। वह केवल अपनी मुख्य सेवकाई और अन्य सेवाओं के बीच अंतर स्पष्ट कर रहा था। उसका प्रधान कार्य था सुसमाचार प्रचार और कलीसियाओं की स्थापना, न कि हर व्यक्ति को स्वयं बपतिस्मा देना।

वह आगे लिखता है:

“मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैंने क्रिस्पुस और
गयुस को छोड़ तुम में से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया… और
मैंने स्तिफनुस के घराने को भी बपतिस्मा दिया; इसके सिवा
मुझे स्मरण नहीं कि मैंने और किसी को बपतिस्मा दिया हो।”
— 1 कुरिन्थियों 1:14–16

यह स्पष्ट है कि पौलुस बपतिस्मा देता था, परन्तु उसने प्रायः यह सेवा दूसरों को सौंप दी ताकि वह अधिक स्थानों में जाकर सुसमाचार सुना सके। वह बपतिस्मा के विषय में शिक्षा देता था और यह भी सुनिश्चित करता था कि लोग सही बाइबलीय बपतिस्मा लें (देखें: प्रेरितों के काम 19:1–5)।

क्या पौलुस यह सिखा रहा था कि हमें बपतिस्मा का प्रचार नहीं
करना चाहिए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

“पौलुस ने कहा, ‘यूहन्ना ने तो मन फिराव का बपतिस्मा दिया और लोगों से कहा कि जो उसके बाद आने वाला है, अर्थात् यीशु, उस
पर विश्वास करें।’ यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया।”
— प्रेरितों के काम 19:4–5

इससे स्पष्ट है कि पौलुस ने कभी बपतिस्मा से परहेज़ नहीं किया; उसने केवल अपनी प्रेरितिक बुलाहट को प्राथमिकता दी और एक टीम के रूप में कार्य किया।

3. पूरे सुसमाचार के प्रचार में बपतिस्मा अनिवार्य है

प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं बपतिस्मा को महान आदेश का अभिन्न भाग बनाया:

“इसलिये तुम जाकर सब जातियों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता
और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो; और उन्हें
सब बातें मानना सिखाओ, जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं।”
— मत्ती 28:19–20

क्या पौलुस यह सिखा रहा था कि हमें बपतिस्मा का प्रचार नहीं
करना चाहिए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

केवल मसीह पर विश्वास का प्रचार करना, परन्तु लोगों को बपतिस्मा और आज्ञाकारिता के लिये न बुलाना—यह अधूरा सुसमाचार है। प्रारम्भिक कलीसिया के प्रेरित इसे भली-भाँति समझते थे:

“पतरस ने उनसे कहा, ‘मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने पापों
की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तब तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।’”
— प्रेरितों के काम 2:38

4. सेवाओं का विभाजन संदेश को समाप्त नहीं करता

प्रेरितों के काम 6 में हम देखते हैं कि प्रेरितों ने भोजन बाँटने की सेवा दूसरों को सौंप दी, ताकि वे वचन और प्रार्थना पर ध्यान दे सकें:

“यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर के वचन को छोड़कर रसोई का काम करें… परन्तु हम तो प्रार्थना और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।”
— प्रेरितों के काम 6:2, 4

क्या पौलुस यह सिखा रहा था कि हमें बपतिस्मा का प्रचार नहीं
करना चाहिए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

इसी प्रकार, पौलुस ने भी बपतिस्मा देने का कार्य कई बार दूसरों को सौंपा। परन्तु उसने बपतिस्मा का प्रचार करना या उसके महत्व को सिखाना कभी नहीं छोड़ा।

5. चुनिंदा विषयों का प्रचार आत्मिक रूप से खतरनाक है

परमेश्वर का वचन हमें चेतावनी देता है कि हम उसमें न तो कुछ जोड़ें और न ही कुछ घटाएँ:

“मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी के वचनों को
सुनता है, चितावनी देता हूँ कि यदि कोई इनमें कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर इस पुस्तक में लिखी हुई विपत्तियाँ उस पर बढ़ाएगा;
और यदि कोई इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी के वचनों में से कुछ घटाए, तो परमेश्वर जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से उसका भाग घटाएगा।”
— प्रकाशितवाक्य 22:18–19

बपतिस्मा, पवित्रता या पश्चाताप जैसे विषयों से इसलिए बचना कि वे “संवेदनशील” हैं—यह आत्मिक समझौता है। इसी कारण पौलुस तीमुथियुस से कहता है:

क्या पौलुस यह सिखा रहा था कि हमें बपतिस्मा का प्रचार नहीं करना चाहिए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

“वचन का प्रचार कर; समय और बे समय तैयार रह; सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ समझा, घुड़का और चिता।”
— 2 तीमुथियुस 4:2

6. सत्य कभी-कभी चुभता है—परन्तु वही चंगा करता है

सत्य कभी-कभी मन को दुखी करता है, परन्तु वही दुख पश्चाताप और उद्धार की ओर ले जाता है:

“क्योंकि परमेश्वर के अनुसार का शोक ऐसा मन फिराव उत्पन्न
करता है, जिसका फल उद्धार है और फिर पछताना नहीं पड़ता;
परन्तु संसार का शोक मृत्यु उत्पन्न करता है।”
— 2 कुरिन्थियों 7:10

यदि आप जानते हैं कि किसी का बपतिस्मा गलत रीति से हुआ है या वह पाप में जीवन बिता रहा है, और फिर भी केवल उसकी भावनाओं की रक्षा के लिये चुप रहते हैं—तो आप उसकी सहायता नहीं कर रहे। आप उस सत्य को रोक रहे हैं जो उसे बचा सकता है।

क्या पौलुस यह सिखा रहा था कि हमें बपतिस्मा का प्रचार नहीं
करना चाहिए?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

हम सब पूरे सुसमाचार का प्रचार करने के लिये बुलाए गए हैं

हर प्रचारक, शिक्षक और प्रत्येक विश्वास करने वाला व्यक्ति परमेश्वर के वचन की पूरी सच्चाई को साझा करने के लिये बुलाया गया है—न कि केवल वही बातें जो लोकप्रिय या कहना आसान हों।

बपतिस्मा सुसमाचार का भाग है।
उसी प्रकार पश्चाताप, पवित्रता, विश्वास, आज्ञाकारिता और पवित्र आत्मा भी सुसमाचार का भाग हैं।

यदि परमेश्वर ने किसी बात को अपने वचन में प्रकट किया है, तो उसे सिखाना और प्रचार करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

प्रभु आ रहा है!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp